**Semester 4**

| Course Code | Course Title | Course ID | L | T | P | L | T | P | Total Credits | MARKS | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | (Hrs) | | | Credits | | | | TI | TE | PI | PE | Total |
| **Core Course(s)** | | | | | | | | | | | | | | |
| CC-A10 | दर्शन 3 | | 3 | 1 | 0 | 3 | 1 | 0 | 4 | 30 | 70 | - | - | 100 |
| CC-A11 | काव्यशास्त्र 2: काव्यप्रकाश | | 3 | 1 | 0 | 3 | 1 | 0 | 4 | 30 | 70 | - | - | 100 |
| **Discipline Specific Elective Courses** | | | | | | | | | | | | | | |
| DSE-04 | शोध विज्ञान (DSE) | | 2 | 0 | 2 | 2 | 0 | 2 | 3 | 10 | 50 | 15 | - | 75 |
| **Multidisciplinary Course(s)** | | | | | | | | | | | | | | |
| MDC-04 | | | | | | | | | 3 | | | | | |
| **Ability Enhancement Course(s)** | | | | | | | | | | | | | | |
| AEC-03 | **व्यावहारिक संस्कृत-3** | | **1** | **0** | **2** | **1** | **0** | **2** | **2** | **15** | **25** | **10** | | |
| **Community Engagement/Field Work/Survey/Seminar** | | | | | | | | | | | | | | |
| **Seminar** | | | | | | | | | **6** | | | | | |
| **Total Credits** | | | | | | | | | **22** | | | | | |

**251/SKT/CC401**

**SEMESTER- 4**

**M A SANSKRIT**

**CORE COURSES PAPER-1**

| Course Code | | Credit | Structure | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | L | T | P | TOTAL CREDIT UNITS |
| | दर्शन-3 | 3 | 2 | 1 | 0 | 3 |

**पाठ्यक्रम विवरण (course description)**

इस पाठ्यक्रम में पातञ्जलयोगसूत्र के मूल सूत्रों के साथ-साथ व्यासभाष्य का समन्वित अध्ययन किया जाएगा, जिससे योगदर्शन की गहराई से समझ संभव होगी। साथ ही, वेदान्त दर्शन के मूल ग्रंथ ब्रह्मसूत्र के प्रथम अध्याय के पहले पाद (१.१) का गहन अध्ययन कराया जाएगा, जिसमें वेदान्त के सिद्धान्तों की दार्शनिक व्याख्या होती है।

पाठ्यक्रम में योग और वेदान्त के तुलनात्मक दृष्टिकोण, उनकी तात्त्विक पृष्ठभूमि, साधन, और मोक्ष की अवधारणा आदि का विश्लेषण भी शामिल रहेगा।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):**

- पातञ्जलयोगसूत्र के दर्शनिक मूल्यों को व्यासभाष्य सहित समझाना।
- ब्रह्मसूत्र १.१ के सूत्रों की शांकरभाष्य के आलोक में व्याख्या करना।
- योग और वेदान्त दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन कराना।
- भारतीय दार्शनिक परंपरा में योग और वेदान्त के स्थान को स्पष्ट करना।
- छात्रों को शास्त्रीय तर्कशक्ति, भाष्य अध्ययन कौशल, और दार्शनिक गहराई से परिचित कराना।

**इकाई-1 :**

- समाधिपाद- चित्तभूमियाँ व चित्तवृतियाँ, प्रमाणमीमांसा, वृतिनिरोध के उपाय, ईश्वर का स्वरूप, सम्प्रज्ञात व असम्प्रज्ञात समाधि
- कैवल्यपाद- पञ्चविध सिद्धियाँ,

**इकाई-2** :

- जात्यन्तरपरिणाम, निर्माणचित्त, चतुर्विधकर्म, जीवन्मुक्ति, धर्ममेघसमाधि व कैवल्यस्वरूप
- ब्रह्मसूत्र (१.१)

इकाई-३ : अध्यासभाष्य

इकाई-४ : जिज्ञासाधिकरण

**मूल ग्रन्थ**:

2, ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (चतुःसूत्री) (व्याख्याकार) आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1966

2. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (चतुःसूत्री) (व्याख्याकार) रमाकान्त त्रिपाठी, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1979

3. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (व्याख्याकार) कामेश्वरमिश्र, चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, वाराणसी, 1976

4. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य भामती टीका अनुवाद सहित (सम्पादक), स्वामी योगीन्द्रानन्द, षड्दर्शनप्रकाशन, वाराणसी, 1982.

5.पातञ्जलयोगदर्शनम् - पतञ्जलि, (व्याख्याकार) सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1993

6.पातञ्जलयोगदर्शनम् पतञ्जलि, (व्याख्याता) स्वामी हरिहरानन्द 'आरण्यक', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1974

7.योगसूत्रम् - पतञ्जलि, (अनुवादक) रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1985

**सहायकग्रन्थ :**

1.योगसूत्रम् - पतञ्जलि, (अनुवादक) रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1985

2. Deussen, Paul Philosophy of Upanishads, Education Enterprise, Calcutta, 1972

3. Dasgupta, S.N. - History of Indian Philosophy, M.L.B.D., Delhi, 1975

4.Hiriyanna, M. Outline of Indian Philosophy, London, 1956 (also Hindi Translation)

5.उपाध्याय, बलदेव भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर, वाराणसी, 2001

6.शर्मा, चन्द्रधर भारतीय दर्शन: आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2010

**पाठ्यक्रम के परिणाम: (Learning Outcomes):**

**इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:**

- पाठ्यक्रम समाप्ति पर छात्र भारतीय दर्शन की शास्त्रीय व व्यावहारिक समझ विकसित करेंगे।
- भारतीय दर्शन और उसके विकासक्रम को आधुनिक सन्दर्भ में समझेंगे।
- भारतीय दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं व समस्याओं की समझ विकसित करेंगे।
- भारतीय दार्शनिक शास्त्रों का आलोचनात्मक व तुलनात्मक विश्लेषण की योग्यता प्राप्त करेंगें।

**बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:** यह प्रश्न पत्र दो खंडों में विभाजित होगा। परीक्षक से अनुरोध है कि खंड 'अ' को अनिवार्य प्रश्न के रूप में चुनें, जिसके 14 अंक होंगे और यह संपूर्ण पाठ्यक्रम से होगा (यह वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिपरक हो सकता है)। खंड 'ब' में प्रत्येक इकाई से दो प्रश्नों का चयन करना होगा। छात्रों को प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न हल करना होगा। प्रत्येक इकाई के सभी प्रश्नों के अंक समान होंगे।

**SEMESTER- 4**

**M A SANSKRIT**

**CORE COURSES PAPER-1**

| Course Code | | Credit | Structure | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | L | T | P | TOTAL CREDIT UNITS |
| | **काव्यशास्त्र 2: काव्यप्रकाश** | 4 | 3 | 1 | 0 | 4 |

**पाठ्यक्रम विवरण (Course Description):**

यह पाठ्यक्रम संस्कृत काव्यशास्त्र के तीन प्रमुख अंगों - काव्य मीमांसा (काव्यप्रकाश), छन्दशास्त्र, तथा अलंकारशास्त्र - का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। मम्मटाचार्यकृत काव्यप्रकाश के प्रमुख अंशों के माध्यम से काव्य के लक्षण, प्रयोजन, रस, अलंकार, गुण, दोष आदि का विश्लेषण किया जाएगा, जबकि छन्द एवं अलंकार की व्यावहारिक पहचान और उदाहरणों सहित अभ्यास कराया जाएगा।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):**

- मम्मट के काव्यप्रकाश ग्रंथ के प्रमुख अंशों का अध्ययन कराना।
- काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं – रस, अलंकार, गुण, दोष आदि – की सम्यक समझ प्रदान करना।
- संस्कृत छन्दों के प्रकार, लक्षण और गणों की पहचान एवं अभ्यास कराना।
- प्रमुख अलंकारों की परिभाषा, उदाहरण एवं व्यावहारिक उपयोग सिखाना।
- छात्र में काव्य-विश्लेषण, छन्द रचना, तथा अलंकार विवेचन की क्षमता विकसित करना।

**इकाई-1:** काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास

- भरत, भामह, दण्डी, वामन, आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, मम्मट, विश्वनाथ
- काव्यलक्षण एवं काव्य हेतु

**इकाई-2:** काव्यप्रकाश - प्रथम उल्लास, द्वितीय उल्लास

**इकाई-3:** काव्यप्रकाश - तृतीय उल्लास, चतुर्थ उल्लास

**इकाई-4:** छन्दशास्त्र. अलंकारशास्त्र

- अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता
- शब्दालंकार: अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि
- अर्थालंकार: उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टांत, विभावना, व्यतिरेक
- सौन्दर्यशास्त्र में अलंकारों का योगदान

Reference Books:


1. मम्मटाचार्य. (2009). काव्यप्रकाश (डॉ. शिवकुमार सिंह द्वारा हिंदी टीका सहित). वाराणसी: चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन।
2. आनन्दवर्धन. (2012). ध्वन्यालोक (डॉ. गोपीनाथ कविराज द्वारा हिंदी भाष्य सहित). वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन।
3. डॉ. रामचन्द्र तिवारी. (2001). संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल. (1992). संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास. दिल्ली: साहित्य भवन।
5. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी. (2010). भारतीय काव्यशास्त्र. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
6. नागेश भट्ट. (2005). छन्दोमञ्जरी (हिंदी व्याख्या सहित). वाराणसी: चौखम्भा ओरिएण्टलिया।
7. डॉ. गोवर्धन शर्मा 'कांत'. (2008). अलंकार शास्त्र. वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत सीरीज कार्यालय। केलकर, आशालता। (1998)। *संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
8. देव, नागेन्द्रनाथ। (1992)। *भारतीय काव्यशास्त्र*। वाराणसी: भारती साहित्य संस्थान।
9. पंडित, विश्वनाथ शर्मा। (2005)। *छन्दशास्त्र प्रवेशिका*। जयपुर: राजस्थान संस्कृत अकादमी।
10. शुक्ल, हजारीप्रसाद। (1959)। *काव्य में रस*। प्रयाग: लोकभारती प्रकाशन।
11. कपूर, हरिनारायण। (2004)। *अलंकार शास्त्र का विवेचनात्मक अध्ययन*। लखनऊ: भारती पुस्तक भवन।


पाठ्यक्रम परिणाम (Course Outcomes):

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर विद्यार्थी:

- छात्र काव्यशास्त्र की प्रमुख धाराओं एवं तत्त्वों को समझ सकेंगे।
- वे काव्यप्रकाश के माध्यम से काव्य के गुण-दोष, रस-अलंकार आदि की विश्लेषण क्षमता विकसित करेंगे।
- विभिन्न छन्दों को पहचानने, विश्लेषित करने एवं स्वयं रचने में सक्षम होंगे।
- अलंकारों की गूढ़ता एवं सौंदर्यशास्त्रीय प्रभाव को समझकर कविता में उनके प्रयोग की क्षमता अर्जित करेंगे।
- विद्यार्थी शुद्ध छन्दबद्ध तथा अलंकारयुक्त संस्कृत काव्य का आस्वादन एवं निर्माण कर सकेंगे।

**बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:** यह प्रश्न पत्र दो खंडों में विभाजित होगा। परीक्षक से अनुरोध है कि खंड 'अ' को अनिवार्य प्रश्न के रूप में चुनें, जिसके 14 अंक होंगे और यह संपूर्ण पाठ्यक्रम से होगा (यह वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिपरक हो सकता है)। खंड 'ब' में प्रत्येक इकाई से दो प्रश्नों का चयन करना होगा। छात्रों को प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न हल करना होगा। प्रत्येक इकाई के सभी प्रश्नों के अंक समान होंगे।

**SEMESTER-4**

**M A SANSKRIT**

**DSC**

| Course Code | | Credit | Structure | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | L | T | P | TOTAL CREDIT UNITS |
| | **शोध विज्ञान** | 3 | 2 | 1 | 0 | 3 |

**पाठ्यविवरण (Course Description):**

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों, पद्धतियों, और तकनीकों से परिचित कराता है। विशेष रूप से संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में शोध लेखन की पद्धति, स्रोतों की पहचान, ग्रंथों की समालोचना, टिप्पण लेखन, उद्धरण शैली, और अनुसंधान विषय के चयन की विधियाँ इसमें सम्मिलित हैं। यह पाठ्यक्रम पारंपरिक और आधुनिक दोनों शोध दृष्टिकोणों का समन्वय करता है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):**

- शोध के उद्देश्य, स्वरूप एवं क्षेत्र का ज्ञान कराना।
- शोध विषय चयन की प्रक्रिया एवं पद्धतियों को स्पष्ट करना।
- शास्त्रीय ग्रंथों की समालोचना, संपादन और टीका-पद्धति का परिचय देना।
- शोध रिपोर्ट (Thesis/Dissertation) के निर्माण की संरचना सिखाना।
- आधुनिक अनुसंधान उपकरण (जैसे ग्रंथसूची, उद्धरण पद्धति, डेटा संग्रहण) से परिचय कराना।

**इकाई 1:- शोध का स्वरूप और उद्देश्य**

- शोध की परिभाषा, लक्षण एवं प्रकार
- शोध में समस्या का चयन
- अनुसंधान का क्षेत्र और विधाएँ (साहित्य, व्याकरण, दर्शन, इतिहास आदि)
- ग्रंथवाचन, टीका, भाष्य, व्याख्या की पद्धतियाँ

**इकाई 2 : - आधुनिक शोध प्रविधियाँ**

- सन्दर्भ सूची (Bibliography), ग्रंथसूची का निर्माण
- उद्धरण प्रणाली (MLA, Chicago, IAST, आदि)
- विषय सूची, ग्रंथ अनुक्रमणिका, और शोध की भाषा

- ऑनलाइन डेटाबेस, कोश, डिजिटल पाण्डुलिपियाँ

**इकाई 3 :- शोध लेखन कौशल**

- शोध प्रबंध / निबंध की रचना प्रक्रिया
- प्रस्तावना, उद्देश्यों की स्पष्टता, अध्याय विभाजन
- शोध में मौलिकता और स्रोत विश्लेषण
- शोध में Plagiarism की अवधारणा एवं निवारण

**सुझावित ग्रंथ (Suggested Readings):**

1. **शोध प्रविधि** - डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ल
2. **Research Methodology** - Kothari, C.R.
3. **An Introduction to Research Methodology** - Garg, B.L.
4. **Sanskṛta Sāhitya Meṃ Anusandhāna** - डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
5. **Textual Criticism and Editorial Techniques** - T. Ganapati Sastri
6. **Prachya Vidya aur Sanskrit Shodh** - डॉ. रामकरण शर्मा

**पाठ्यक्रम के परिणाम: (Learning Outcomes):**

**इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:**

- शोध विषय की पहचान एवं उसका निर्धारण कर सकेंगे।
- पारंपरिक एवं आधुनिक शोध पद्धतियों का उपयुक्त प्रयोग कर सकेंगे।
- शोध प्रबंध की संरचना एवं शैली में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- संस्कृत विषयों में स्वतंत्र अनुसंधान के लिए सक्षम बनेंगे।

**बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:** यह प्रश्न पत्र दो खंडों में विभाजित होगा। परीक्षक से अनुरोध है कि खंड 'अ' को अनिवार्य प्रश्न के रूप में चुनें यह संपूर्ण पाठ्यक्रम से होगा (यह वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिपरक हो सकता है)। खंड 'ब' में प्रत्येक इकाई से दो प्रश्नों का चयन करना होगा। छात्रों को प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न हल करना होगा। प्रत्येक इकाई के सभी प्रश्नों के अंक समान होंगे।

**सेमिनार कोर्स**

सेमिनार कोर्स मूल रूप से एक अंतःविषयक कोर्स है जिसे छात्रों के लिए उनके प्रस्तुतिकरण और लेखन कौशल को समृद्ध करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। संकाय, साथियों के साथ महत्वपूर्ण जुड़ाव उन्हें अपने शोध और शोध प्रबंध

के लिए विषयों को चार्ट करने में मदद करेगा। इस कोर्स का एक उद्देश्य उन्हें उनके चुने हुए विषयों की कार्यप्रणाली के बारे में जागरूक करना है। यह उन्हें अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन और वाद-विवाद में भाग लेने में मदद करेगा।